

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, आर०बी०जी०आर०

कॉलेज, महाराजगंज सिवान

अरब - सिन्ध आक्रमणकारण और परिणाम

अरबों का पहला आक्रमण खलीफा उमर के

शासन काल में 636 ई० में बम्बई के निकट थाना पर हुआ। यह उनका जल अभियान था। जिसमें वे पीछे खदेड़ दिये गये। विजय-श्रीन मिलने के बाद भी उनका साहस भंगन हुआ। वे भारत की विपुल धनराशि प्राप्त करने और यहाँ इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए कटिबद्ध रहे। अरबों का दूसरा आक्रमण 644 ई० में रचलमार्ग (मकरान तट) से सिंध के पश्चिमी भाग पर हुआ। अब्दुल्ला ने मकरान और सिंध के शायकों को पराजित किया। 659 में अलहरीस, एवं 664 में अल-मुहल्लब एवं ^{इसके बाद} अब्दुल्ला का असफल आक्रमण होता रहा। 8वीं शताब्दी के प्रारंभ में अरबों ने मकरान या बलुचिस्तान को जित लिया जिससे सिंध आक्रमण के लिए उनका मार्ग प्रशस्त हो गया। 711 ई० में मुहम्मद बिन कासिम का प्रसिद्ध आक्रमण सिंध पर हुआ। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे।

1- इस्लाम का प्रचार - सिंध पर अरब आक्रमण का

मुख्य उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना था। इस्लाम धर्म के पैगम्बर मुहम्मद साहब ने अपने अनुयायियों को इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए प्रेरित किया था। अतः अरबों के सिन्ध आक्रमण की पृष्ठभूमि में उनका धार्मिक उत्साह था।

2- धन का प्रलोभन - अरबों की आर्थिक स्थिति अत्यंत

अत्यंत ही शोचनीय थी। उनके जीविकोपार्जन के साधन सीमित थे। व्यापार के क्रम में अरबों ने अपनी आँखों से भारत की विपुल धनराशि देखी थी। अतः 711 ई० में उनके सिन्ध आक्रमण का मौलिक कारण धनप्रलोभन था।

3- समुद्री डाकुओं द्वारा जहाजों पर डाका - अरब सिंध

आक्रमण का तात्कालिक कारण इतिहासकार हेग के अनुसार समुद्री डाकुओं द्वारा जहाजों पर डाका है। बात यह थी कि कुछ अरब व्यापारी श्रीलंका में अपने जहाजों पर सामान लादकर अरब सागर

होते अपने देश को लौट रहे थे। जब वे सिंध के तट के समीप से गुजरे तो थड़ा नामक स्थान पर समुद्री डाकुओं ने उन्हें लूट लिया। फलतः व्यापारियों ने अपनी दुर्दशा की कहानी अतिरंजित कर बखरा के शासक हज्जाज को कह सुनाई। इस पर हज्जाज ने सिंध के शासक दाहिर से लूट का चैन लौटाने, अपराधियों को सजा देने एवं शक्तिपूर्ति की मांग की। इस पर दाहिर ने स्पष्ट उत्तर दिया कि समुद्री डाकु उनकी प्रजा नहीं हैं तथा वह किसी भी तरह की शक्तिपूर्ति देने में असमर्थ हैं। दाहिर के इस जवाब से हज्जाज बड़ा क्रोधित हुआ। उसने रतलीफा से आक्रमण की अनुमति प्राप्त कर अब्दुल्लाह और फीर बुहेल के नेतृत्व में सेना, सिंध आक्रमण के लिए भेजी। दोनों आक्रमण असफल रहे। अन्त में उसने अपने चचेरे भाई तथा दामाद मुहम्मद बिन कासिम के सेनापतित्व एक विशाल सेना सिंध आक्रमण के लिए भेज दी। कासिम ने सिंध के शासक को हराया और सिंध पर विजय प्राप्त की।

अरबों के सिंध विजय के परिणाम - प्रसिद्ध इतिहासकार लेनपूल के शब्दों में, "अरबों की सिंध-विजय इस्लाम तथा भारत के इतिहास में एक साधारण घटना थी। यह एक ऐसी विजय थी जिसका कोई गहरा परिणाम नहीं हुआ।" यह कथन आंशिक सत्य है। बात यह है कि अरबों की सिंध-विजय स्थायी साबित नहीं हो सकी। उसकी शासन व्यवस्था अधिक दिनों तक नहीं चल सकी। उन्हें भारत से विदा होना पड़ा। विदा होते समय वे अपने निर्मित भवनों या इमारतों को विनष्ट करते गए तथा जो शेष रह भी गए, वे कालान्तर में ध्वस्त होकर मिट्टी में मिल गए। इस प्रकार अरबों की सिंध विजय का कोई राजनीतिक या वास्तुकला संबंधी अवशेष नहीं रहा। किन्तु अरब-सिंध विजय के दूरगामी परिणामों की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतएव लेनपूल का यह कथन कि अरब सिंध विजय एक महत्वपूर्ण घटना नहीं थी, अंशतः ही सत्य है। अरबों की सिंध विजय के परिणामों की चर्चा

निम्नीकृत तथ्य विंदुओं में की जा सकती है —

1-प्रशासनिक परिणाम — सिंध पर प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात् कासिम ने वहाँ अपनी शासन व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया। यह सत्य है कि, वह दीर्घ काल तक सिंध में नहीं रह सका और अपने प्रशासन तंत्र को मजबूत नहीं कर सका, फिर भी उसने सिंध में अरबी शासन व्यवस्था की नींव अवश्य डाली। यह लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक कायम रही। अरबों के साथ-साथ स्थानीय हिन्दू भी सेना और शासन के पदों पर बहाल किए गए। राजस्व-प्रबंध का अधिकांश काम हिन्दू ही करते थे। प्रान्तों को जिलों या अकतों में बांट दिया गया था। न्याय कार्य इस्लामी कानून के अनुसार होता था। उच्च न्याय पीश काजी कहलाता था। अरबी कबीले सिंध के नगरों में बस गए और उन्होंने मंसूरा, बैजा, महफूजा, मुल्तान आदि स्थानों में अपनी बस्तियाँ कायम कीं।

2- इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार — अरबों की सिंध विजय का एक महत्वपूर्ण परिणाम भारत में पहले-पहल इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार है। कासिम ने विजितों को इस्लाम धर्म अंगीकार करने के लिए बाध्य किया। जो ऐसा नहीं करते, उन्हें या तो प्राण गँवाने पड़े या जजिया देना पड़ा। कुछ हिन्दुओं ने प्रलोभनवश या भयवश इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। वे भारत में इस्लामी सभ्यता संस्कृति के जनक बन गये। देखा में धीरे-धीरे मुसलमानों की संख्या बढ़ी गई। इसका अन्तिम परिणाम भारत का 1947 में दो खण्डों (भारत और पाकिस्तान) में विभाजन था।

3- सांस्कृतिक परिणाम — भारत राजनीतिक दृष्टिकोण से भले ही निर्बल और एकताहीन था परन्तु सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बड़ा ही उन्नत और अजेय था। यहाँ की सभ्यता संस्कृति उच्च कोटि की थी। यह अपने दर्शन और अद्भुत चिंतन के लिए जगत्

प्रसिद्ध था। अरबों ने यह अनुभव किया कि वे जिस एकेश्वरवाद को अपना मौलिक दर्शन समझते थे, वह भारत के दर्शन में पहले से ही विद्यमान था। अरब वाले हिन्दू विद्वान तथा दार्शनिकों की ओर आकृष्ट हुए। भारत ज्योतिष और चिकित्सा का लिए जगत् प्रसिद्ध था। खलीफा हारुन रशीद ने एक भारतीय वैद्य को एक असाध्य रोग की चिकित्सा के लिए बुलवाया था। कहा जाता है कि उस वैद्य को पूर्ण सफलता मिली और वह पुनः सुरक्षित अपने देश को लौटा दिया गया। अरबी विद्वानों ने बौद्ध भिक्षुओं और ब्राह्मण पंडितों से दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक, गणित, भौतिक विज्ञान तथा अन्य विषयों का ज्ञान प्राप्त किया और यूरोप में इसका प्रचार किया। अरब वाले भारतीय वास्तुकला, संगीतकला, चित्रकला आदि से भी प्रभावित हुए। ब्राह्मण अफसरों को शासन कार्य में रखकर उन्होंने शासन कला का ज्ञान प्राप्त किया। अरब वाले मुक्तकंठ से भारतीय संस्कृति की प्रशंसा करने लगे। भारत के अनेक विद्वानों को लगद्दाह में आमंत्रित किया गया। उनका काम भारतीय दर्शन, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि ग्रंथों का अरबी अनुवाद करना था। सर्वप्रसिद्ध ब्रह्मगुप्त कृत ब्रह्मसिंहस्त और खण्डखाद्यक का अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। इन्हीं ग्रंथों से अरब वालों ने खगोल विद्या के मौलिक सिद्धान्त को सीखा। उन्होंने अंकों का ज्ञान हिन्दुओं से प्राप्त किया था। इसी से वे अंकों को हिन्दसा कहते थे।

उपर्युक्त कथनों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अरब वालों ने भारत की राजनीतिक विजय अवश्य की और भारत ने उन पर सांस्कृतिक विजय प्राप्त की। इस्लाम के प्रारंभिक काल में भारत ने जिस भूभाग उसका गुरु था जिसने अनेक विद्याएँ सिखलाई तथा उसके साहित्य, कला, दर्शन आदि को एक विशेष रूप दिया।